हफ़्तावार रिसाला : 424
Weekly Booklet : 424

25 Irshadate Ghause Aazam (Hindi)
(Tahrirate Amire Ahle Sunnat)

مكتبة المدينة ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

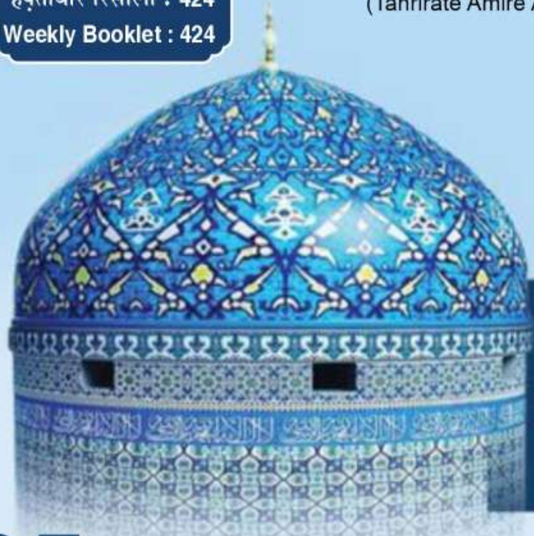

الله
غوث الاعظم علیہ رحمۃ اللہ الاکرم
کی گیارھویں شریف
مبارک ہو!

25 इरशादाते ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

(तह़रीराते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

(सफ़ह़ात : 25)

तीन ज़रूरी चीज़ें 09
दोस्त कौन ? 20
मुफ़ीद दुआएं 13
सलामती के रास्ते 23

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

25 इरशादाते ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अत्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई "25 इरशादाते ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले उसे फ़ैज़ाने ग़ौसे आज़म से मालामाल फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمِين بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ है, उसी दिन ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह पैदा हुए, इसी में उन की रूहे मुबारका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन हलाकत त़ारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूंकि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बाद दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?" इरशाद फ़रमाया कि "अल्लाह पाक ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है।" (ابوداؤد،1/391،حدیث:1047)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰی مُحَمَّد

﴾1﴿ बुरे अख़्लाक़ का इलाज

بھوک پیاس برداشت کرنا اور راتوں کو جاگنا
آسان ہے مگر ''بُرے اَخلاق'' کا علاج بہت مُشکِل ہے۔

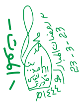

भूक प्यास बरदाश्त करना और रातों को जागना आसान है मगर "बुरे अख़्लाक़" का इलाज बहुत मुश्किल है।

(ग़ुन्यतुत्तालिबीन (उर्दू), स. 687)

The Cure for Bad Manners

"Enduring hunger and thirst, and staying awake at night is easy, but the cure for bad manners is very difficult."[1]

1 Ghunyat al-Ṭālibīn (Urdu), p. 687

﴾2﴿ मौत क़रीब है

بعض لوگ ہنس رہے ہوتے ہیں
حالانکہ ان کی موت قریب آچکی ہوتی ہے۔

बाज़ लोग हंस रहे होते हैं हालांकि
उन की मौत क़रीब आ चुकी होती है।

(غُنْیَۃُ الطّالِبِین، 1/348)

Death is Near

"Some people laugh even though their death is near."[1]

---

1 Ghunyat al-Ṭālibīn, vol. 1, p. 348

﴾3﴿ ईद का दिन

میں تو جس دن اِس دنیا سے اپنا ایمان سلامت
لے کر گیا میرے لئے تو وُہی دن عید ہوگا۔

मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया मेरे लिये तो वोही दिन ईद होगा। (फ़ैज़ाने ग़ौसे आज़म, स. 8)

The Day of Eid

"The day I leave this world with my faith intact will be my Eid."[1]

---

1 Faizan-e-Ghawth-e-Aʿẓam, p. 8

﴾4﴿ सच्चाई का दामन न छोड़ो

اللہ پاک کی نافرمانی نہیں کرنی چاہئے اور
سچّائی کا دامن ہاتھ سے نہیں چھوڑنا چاہئے۔

अल्लाह पाक की नाफ़रमानी नहीं करनी चाहिये और सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये।

(فُتُوحُ الغیب مع قلائد الجواہر، ص44 ملخصًا)

Do Not Abandon Truthfulness

"You must not disobey Allah Almighty, and you must not abandon truthfulness."[1]

1 Futūḥ al-Ghayb maʿ Qalāʾid al-Jawāhir, p. 44, summarised

﴾5﴿ इज़्ज़तो करामत का ताज

اللہ پاک کی صبح و شام فرماں برداری کرتے رہو
جب تم ایسا کرو گے تو عزّت و کرامت (یعنی بزرگی)
کا تاج تمہارے سر پر ہوگا۔

अल्लाह पाक की सुब्हो शाम फ़रमां बरदारी करते रहो जब तुम ऐसा करोगे तो इज़्ज़तो करामत (यानी बुज़ुर्गी) का ताज तुम्हारे सर पर होगा।

(الفتح الرَّبّانی، ص 51 ملخصًا)

The Crown of Honour and Dignity

"Remain obedient to Allah Almighty morning and evening. When you do so, the crown of honour and dignity will be upon your head."[1]

1 Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 51, summarised

﴾6﴿ सब तेरा हुक्म मानेंगे !

جب تو اللہ پاک کے حکم کا پابند ہو جائے گا

تو تمام کائنات تیرا حکم مانے گی۔

जब तू अल्लाह पाक के हुक्म का पाबन्द हो जाएगा
तो तमाम काएनात तेरा हुक्म मानेगी।

(قلائد الجواہر مع فتوح الغیب، ص26)

The Entire Universe Will Obey You!

"When you become obedient to the command of Allah Almighty, the entire universe will obey you."[1]

---

1 Qalāʾid al-Jawāhir maʿ Futūḥ al-Ghayb, p. 26

﴾7﴿ अक़्लमन्द कहने की वज्ह

عقلمند کو عقلمند اِس لئے کہا جاتا ہے کہ
اِس کی نظر کاموں کے انجام (یعنی END) پر ہوتی ہے۔

अक़्लमन्द को अक़्लमन्द इस लिये कहा जाता है कि इस की नज़र कामों के अन्जाम (यानी END) पर होती है।

(قلائد الجواہر مع فتوح الغیب، ص104)

The Reason for Calling Someone Wise

"A wise person is called wise because he looks at the outcome of actions."[1]

---

1 Qalāʾid al-Jawāhir maʿ Futūḥ al-Ghayb, p. 104

﴾8﴿ आजिज़ी किसे कहते हैं ?

عاجِزی یہ ہے کہ بندہ جس سے ملے اُس کو اپنے
آپ سے بہتر جانے اور یہ سوچے کہ ہو سکتا ہے اِس شخص کا
اللہ پاک کے یہاں مرتبہ مجھ سے زیادہ ہو۔

आजिज़ी येह है कि बन्दा जिस से मिले उस को अपने आप से बेहतर जाने और येह सोचे कि हो सकता है इस शख़्स का अल्लाह पाक के यहां मरतबा मुझ से ज़ियादा हो। (قلائد الجواہر مع فتوح الغیب، ص129)

What is Humility?

"Humility is that a person considers whomever he meets better than himself and thinks that perhaps this person's rank is higher than his in the court of Allah."[1]

---

1 Qalāʾid al-Jawāhir maʿ Futūḥ al-Ghayb, p. 129

﴾9﴿ तीन ज़रूरी चीज़ें

مسلمان کیلئے ہر حالت میں یہ تین چیزیں ضروری ہیں:
(۱) اللہ پاک کے حکم پر عمل کرنا (۲) اُس کی منع کی ہوئی باتوں
سے بچنا اور (۳) اللہ پاک کی رِضا پر راضی رہنا۔

मुसलमान के लिये हर हालत में येह तीन चीज़ें ज़रूरी हैं :
﴾1﴿ अल्लाह पाक के हुक्म पर अमल करना ﴾2﴿ उस की मना की हुई बातों से बचना और ﴾3﴿ अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना।

(फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 17)

Three Necessary Things

For a Muslim, three things are necessary in every situation:

1. Acting upon the command of Allah Almighty.
2. Avoiding what He has forbidden.
3. Being content with His pleasure.[1]

1 Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 17

﴾10﴿ बग़ैर मेहनत के तो दुन्या भी नहीं मिलती तो...

جب یہ فنا (یعنی ختم) ہونے والی دنیا بھی بغیر محنت کے نہیں ملتی تو
جنّت جو کہ ہمیشہ باقی رہنے والی ہے وہ بغیر محنت کے کیسے ملے گی؟
(تو جنّت پانے کیلئے خوب عبادت و ریاضت کیجئے)

जब येह फ़ना (यानी ख़त्म) होने वाली दुन्या भी बग़ैर मेह़नत के नहीं मिलती तो जन्नत जो कि हमेशा बाक़ी रहने वाली है वोह बग़ैर मेह़नत के कैसे मिलेगी ?
(तो जन्नत पाने के लिये ख़ूब इबादतो रियाज़त कीजिये)

(الفتح الرّبّانی، ص222 بِالتَّصَرُّف)

Even the world cannot be attained without effort

"If this perishable world cannot be attained without effort, then how can Paradise, which is everlasting, be attained without effort?"[1]

1 Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 222, with changes

﴾11﴿ थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी रहो

تھوڑے رِزق پر خوش رہ اور اس کو لازِم پکڑ لے
یہاں تک کہ تیرا وقت پورا ہو (یعنی تو فوت ہو) جائے
اور پھر تجھے اس سے بہتر کی طرف لوٹایا جائے۔

थोड़े रिज़्क़ पर ख़ुश रह और उस को लाज़िम पकड़ ले यहां तक कि तेरा वक़्त पूरा हो (यानी तू फ़ौत हो) जाए और फिर तुझे उस से बेहतर की तरफ़ लौटाया जाए। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 62-63 मुलख़्ख़सन)

Be Content with Little Sustenance

"Be happy with little sustenance and hold fast to it until your time is up, and then you will be returned to something better than it."[1]

---

1 Sharḥ Futūḥ al-Ghayb (Urdu), pp. 62-63, summarised

﴾12﴿ ख़ाली हाथ नहीं लौटाया जाता

بارگاہِ الٰہی میں جو کوئی دعا مانگتا ہے، اللہ کریم اس کو
خالی ہاتھ نہیں لوٹاتا لہٰذا تیری دعا کا دنیا یا آخرت میں
تیرے لیے کوئی نہ کوئی فائدہ ضرور ہے۔

बारगाहे इलाही में जो कोई दुआ मांगता है, अल्लाह करीम उस को ख़ाली हाथ नहीं लौटाता लिहाज़ा तेरी दुआ का दुन्या या आख़िरत में तेरे लिये कोई न कोई फ़ाएदा ज़रूर है।

(शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 460-461 मुलख़्ख़सन)

One is Not Sent Back Empty-Handed

"Whoever prays in the divine court, Allah, the Most Generous, does not send him back empty-handed. Therefore, your prayer will certainly bring you some benefit, either in this world or in the Hereafter."[1]

1 Sharḥ Futūḥ al-Ghayb (Urdu), pp. 460-461, summarised

﴾13﴿ मुफ़ीद दुआएं

اللہ پاک سے اپنے پچھلے گناہوں کی معافی، آئندہ گناہوں سے بچنے، اچھی طرح اُس کی عبادت کرنے، اچھی موت اور انبیائے کرام علیہم السلام، صدیقین، شہدا اور نیک بندوں سے ملاقات کی دعائیں مانگا کرو۔

अल्लाह पाक से अपने पिछले गुनाहों की मुआफ़ी, आइन्दा गुनाहों से बचने, अच्छी तरह उस की इबादत करने, अच्छी मौत और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सिद्दिक़ीन, शुहदा और नेक बन्दों से मुलाक़ात की दुआएं मांगा करो।

(फ़ुतूहुल ग़ैब, स. 154)

Beneficial Prayers

"Keep praying to Allah Almighty for the forgiveness of your past sins, to be saved from future sins, the ability to worship Him well, a good death, and the opportunity to meet the Prophets عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, the truthful, the martyrs, and the righteous."[1]

1 Futūḥ al-Ghayb, p. 154

﴾14﴿ अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी

اللہ پاک کی جب تُو فرماں برداری کرے گا مخلوق میں مَخْدُوم (یعنی جس کی خدمت کی جائے ایسا) بنا دیا جائے گا۔

अल्लाह पाक की जब तू फ़रमांबरदारी करेगा मख़्लूक़ में मख़्दूम (यानी जिस की ख़िदमत की जाए ऐसा) बना दिया जाएगा।

(الفتح الرّبّانی، ص44 ملخصًا)

Obedience to Allah

"When you obey Allah Almighty, you will be made honoured among creation, served by others."[1]

---

1 Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 44, summarised

﴾15﴿ धोका खाया

دُنیا کی رونقیں اور آسائشیں دھوکا دینے والی ہیں،
جس نے انہیں پایا دھوکا کھایا اور غافل ہوا۔

दुन्या की रौनक़ें और आसाइशें धोका देने वाली हैं,
जिस ने उन्हें पाया धोका खाया और ग़ाफ़िल हुवा।
(शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 76 मुलख़्ख़सन)

Deceived

"The glitter and comforts of the world are deceptive. Whoever attained them was deceived and became heedless."[1]

---

1 Sharḥ Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 76, summarised

﴾16﴿ तौबा के दरवाज़े में दाख़िल हो जाओ !

(اے لوگو!) جتنی نیکیاں کرسکتے ہو کرو اور توبہ کے دروازے
کو بھی غنیمت جانو اور اس میں داخل ہو جاؤ (یعنی توبہ کرلو)،
نیک لوگوں کے اجتماعات کو بھی غنیمت جانو -

(ऐ लोगो !) जितनी नेकियां कर सकते हो करो और तौबा के दरवाज़े को भी ग़नीमत जानो और उस में दाख़िल हो जाओ (यानी तौबा कर लो), नेक लोगों के इज्तिमाआत को भी ग़नीमत जानो। (الفتح الرّبّانی، ص29)

Enter the Door of Repentance!

"O people! Perform as many good deeds as you can, and value the door of repentance by entering it (i.e., repent). Also, make the most of the gatherings of the righteous."[1]

1 Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 29

﴾17﴿ कुन यानी हो जा

اللہ پاک نے اپنی کسی نازل کی ہوئی کتاب میں فرمایا: اے ابنِ آدم (یعنی اے آدمی!) میں اللہ ہوں میرے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں، میں کسی چیز کو "کُن" کہتا ہوں تو وہ ہو جاتی ہے، تُو میری فرماں برداری کر، میں تجھے ایسا کردوں گا کہ تُو کہے گا: "کُن" (یعنی ہو جا) تو وہ ہو جائے گی۔

अल्लाह पाक ने अपने किसी नाज़िल की हुई किताब में फ़रमाया : ऐ इब्ने आदम (यानी ऐ आदमी !) मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मैं किसी चीज़ को "कुन" कहता हूं तो वोह हो जाती है, तू मेरी फ़रमांबरदारी कर, मैं तुझे ऐसा कर दूंगा कि तू कहेगा : "कुन" (यानी हो जा) तो वोह हो जाएगी। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 44 मुलख़्ख़सन)

Be!

"In a book that He revealed, Allah Almighty said: 'O son of Adam! I am Allah. There is no one worthy of worship but Me. When I say to something, 'Be!' it comes into being. You obey Me, and I will make you such that when you say, 'Be!' and it will come into being.'"[1]

[1] Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 44, summarised

﴾18﴿ शैतान की बरबादी का सबब

اے لوگو! خود کو حسد سے بچاؤ، حسد ہی
وہ بُری عادت ہے جس نے شیطان کو تباہ و برباد
کر دیا اور اس کو رحمتِ الٰہی سے دُور کر کے جہنّمی بنایا۔

ऐ लोगो ! ख़ुद को ह़सद से बचाओ, ह़सद ही वोह बुरी आदत है जिस ने शैत़ान को तबाहो बरबाद कर दिया और उस को रह़मते इलाही से दूर कर के जहन्नमी बनाया। (جِلاءُ الخَواطِر، ص3)

The Cause of Satan's Ruin

"O people! Protect yourselves from envy. Envy is the evil trait that destroyed Satan, and made him a dweller of Hell by distancing him from the mercy of Allah."[1]

---

1 Jilāʾ al-Khawāṭir, p. 3

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आमाल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴾19﴿ दुन्या किस की ख़िदमत करती है ?

اللہ پاک نے اپنی نازل کی ہوئی کسی کتاب میں فرمایا: اے دنیا!
جو میری اِطاعت (یعنی فرماں برداری) کرے تُو اُس کی خدمت کر
اور جو تیری خدمت کرے تُو اُس کو رنج و مُصیبت میں رکھ۔

अल्लाह पाक ने अपनी नाज़िल की हुई किसी किताब में फ़रमाया : ऐ दुन्या ! जो मेरी इत़ाअत (यानी फ़रमांबरदारी) करे तो तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उस को रंजो मुसीबत में रख।

(फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 44 मुलख़्ख़सन)

Whom Does the World Serve?

In a book that He revealed, Allah Almighty said: "O world! You serve the one who obeys Me, and put the one who serves you in hardship and misery."[1]

---

1 Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 44, summarised

﴾20﴿ दोस्त कौन ?

تیرا دوست وُہی ہے جو تجھے بُرائی سے روکے۔

तेरा दोस्त वोह है जो तुझे बुराई से रोके।

(الفتح الرَّبّانی، ص140 ماخوذاً)

Who is a Friend?

"Your friend is the one who stops you from evil."[1]

---

[1] Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 140, extracted

﴾21﴿ ज़िन्दगी का दरवाज़ा

(اے لوگو!) جب تک زندگی کا دروازہ کُھلا ہے
اِس کو غنیمت جانو (یعنی اللہ پاک کو عبادت کر کے راضی کر لو)
کیوں کہ عنقریب یہ دروازہ بند ہونے والا ہے۔

(ऐ लोगो !) जब तक ज़िन्दगी का दरवाज़ा खुला है इस को ग़नीमत जानो (यानी अल्लाह पाक को इबादत कर के राज़ी कर लो) क्यूंकि अन्क़रीब येह दरवाज़ा बन्द होने वाला है।

(الفتح الرّبّانی، ص29)

The Door of Life

"O people! Take advantage of the door of life while it is open (i.e., please Allah through worship), for soon this door will close."[1]

---

[1] Al-Fatḥ al-Rabbānī, p. 29

﴾22﴿ अस्ल माल बना ले

آخِرت کو اپنا اَصل مال بنالے تو تُو
دنیا و آخِرت میں نفع اٹھائے گا۔

आख़िरत को अपना अस्ल माल बना ले तो तू
दुन्या व आख़िरत में नफ़ा उठाएगा।
(फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 290 मुलख़्ख़सन)

Make the Hereafter Your True Wealth

"Make the Hereafter your true wealth, and you will benefit in both this world and the Hereafter."[1]

1 Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 290, summarised

﴾23﴿ सलामती के रास्ते

اے نادان! تجھے حکم دیا گیا ہے کہ تو خود کو سلامتی
کے راستے پر چلا اور سلامتی کے راستے آخرت
اور اللہ پاک کی عبادت کے راستے ہیں۔

ऐ नादान ! तुझे हुक्म दिया गया है कि तू ख़ुद को सलामती के रास्ते पर चला और सलामती के रास्ते आख़िरत और अल्लाह पाक की इबादत के रास्ते हैं।

(फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 290 मुलख़्ख़सन)

The Paths of Salvation

"O ignorant one! You have been commanded to place yourself on the path of salvation. The paths of salvation are the paths of the Hereafter and the worship of Allah Almighty."[1]

---

1 Futūḥ al-Ghayb (Urdu), p. 290, summarised

﴾24﴿ मुसीबत में गिला शिक्वा मत कीजिये

صَبْر یہ ہے کہ مصیبت کے وقت اللہ پاک کے ساتھ
حُسنِ ادب رکھے (یعنی گِلہ شکوہ نہ کرے) اور اُس کے
فیصلوں کے آگے سرِ تسلیم خم کر دے ۔

सब्र येह है कि मुसीबत के वक़्त अल्लाह पाक के साथ हुस्ने अदब रखे (यानी गिला शिक्वा न करे) और उस के फ़ैसलों के आगे सरे तस्लीम ख़म कर दे। (بہجۃ الاسرار، ص234 ملخصاً)

Do Not Complain in Hardship

Patience is to maintain respect before Allah Almighty (i.e., do not complain) in times of hardship and to submit to His decree.[1]

---

1 Bahja al-Asrār, p. 234, summarised

﴾25﴿ सब्र में सलामती है

تم صَبر کو مت چھوڑو کیوں کہ
بھلائی اور سلامتی صَبر ہی میں ہے۔

तुम सब्र को मत छोड़ो क्यूंकि भलाई और
सलामती सब्र ही में है। (قلائد الجواہر، ص59)

In patience lies salvation

"Do not abandon patience, for goodness and peace lie within it." [1]

---

1 Qalāʾid al-Jawāhir, p. 59

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025